JSL, 8(10), Oct 2023: 37- 49

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

JOURNAL OF SCIENTIFIC LETTERS
www.jslsci.com

बाह्य शिक्षण (आउटडोर लर्निंग) की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन

Rahul Kumar Sharma

Research Scholar, Department of Education, Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur, Rajasthan

Dr. Anita Upadhyay

Research Supervisor**,** Department of Education, Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur, Rajasthan

सारांश

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षणसाथ अनुभवात्मक एवं -अधिगम की पारंपरिक पद्धतियों के साथ-सहभागितापूर्ण शिक्षण विधियों का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। बाह्य शिक्षण ऐसी ही एक (आउटडोर लर्निंग) प्रभावी शिक्षण पद्धति है, जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों को कक्षा की सीमाओं से बाहर प्राकृतिक, सामाजिक एवं वास्तविक परिवेश में सीखने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बाह्य शिक्षण की शिक्षण प्रभावशीलता का विश्लेषण करना तथा यह समझना है कि यह विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन, कौशल विकास, सृजनात्मकता, समस्यासमाधान क्षमता-, सहयोगात्मक अधिगम तथा सीखने की प्रेरणा को किस प्रकार प्रभावित करता है। इस अध्ययन में बाह्य शिक्षण के सैद्धांतिक आधार, इसकी आवश्यकता, प्रमुख विशेषताएँ, लाभ एवं शिक्षणअधिगम प्रक्रिया पर इसके प्रभाव का विवेचन किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बाह्य -शिक्षण विद्यार्थियों को सक्रिय, जिज्ञासु तथा आत्मनिर्भर शिक्षार्थी बनने के लिए प्रेरित करता है। यह विधि केवल विषयगत ज्ञान तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों के सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साथ ही, यह शिक्षकों के लिए शिक्षण को अधिक रोचक, प्रभावी एवं व्यवहारिक बनाने का अवसर प्रदान करती है।

मुख्यशब्द- बाह्य शिक्षण आउटड)ोर लर्निंग(, शिक्षण प्रभावशीलता, अनुभवात्मक अधिगम, विद्यार्थीकेंद्रित -शिक्षण, सक्रिय अधिगम, शैक्षणिक उपलब्धि, सृजनात्मकता, सहयोगात्मक अधिगम, पर्यावरणीय शिक्षा।

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार है। बदलते सामाजिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी परिवेश में शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करना नहीं रह गया है, बल्कि उन्हें जीवनोपयोगी ज्ञान, व्यावहारिक कौशल, तार्किक चिंतन, सृजनात्मकता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से भी संपन्न बनाना है। इसी कारण आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अनुभवात्मक अधिगम)Experiential Learning), गतिविधिआधारित -) शिक्षणActivity-Based Learning) तथा विद्यार्थीकेंद्रित शिक्षण पद्धतियों पर विशेष बल दिया जा रहा है। -) बाह्य शिक्षणOutdoor Learning) इन्हीं आधुनिक शिक्षण दृष्टिकोणों में से एक महत्वपूर्ण अवधारणा है।

बाह्य शिक्षण का अर्थ है विद्यार्थियों को विद्यालय की चारदीवारी से बाहर प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा वास्तविक जीवन के वातावरण में शिक्षणअधिगम के अवसर उपलब्ध कराना। इस प्रक्रिया में पार्क-, उद्यान, ऐतिहासिक स्थल, संग्रहालय, विज्ञान केंद्र, कृषि क्षेत्र, वन क्षेत्र, नदी, झील, उद्योग, सामुदायिक संस्थान तथा स्थानीय परिवेश को शिक्षण संसाधन के रूप में उपयोग किया जाता है। बाह्य शिक्षण विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से सीखने का अवसर प्रदान करता है, जिससे उनका अधिगम अधिक स्थायी, अर्थपूर्ण एवं प्रभावी बनता है।

पारंपरिक कक्षाकेंद्रित शिक्षण में अधिकांश समय शिक्षक ज्ञान का मुख्य स्रोत होता है तथा विद्यार्थी निष्क्रिय -श्रोता की भूमिका निभाते हैं। इसके विपरीत बाह्य शिक्षण में विद्यार्थी स्वयं पर्यवेक्षण करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, प्रयोग करते हैं, समूह में कार्य करते हैं तथा वास्तविक परिस्थितियों का विश्लेषण करते हुए निष्कर्ष निकालते हैं। इस प्रकार वे सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता निभाते हैं। यह शिक्षण विधि विद्यार्थियों में जिज्ञासा, अन्वेषण, आत्मविश्वास तथा स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहित करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति)2020) ने भी अनुभवात्मक एवं बहुआयामी अधिगम पर विशेष बल दिया है। नीति में यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़ना आवश्यक है, ताकि विद्यार्थी केवल परीक्षा उन्मुख ज्ञान तक सीमित न रहें-बल्कि व्यावहारिक जीवन की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकें। बाह्य शिक्षण इस उद्देश्य की पूर्ति में अत्यंत प्रभावी माध्यम सिद्ध हो सकता है क्योंकि यह विद्यार्थियों को वास्तविक परिस्थितियों में सीखने का अवसर प्रदान करता है।

बाह्य शिक्षण का महत्व केवल शैक्षणिक उपलब्धि तक सीमित नहीं है। यह विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा भावनात्मक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। प्राकृतिक वातावरण में सीखने से विद्यार्थियों का तनाव कम होता है, ध्यान एवं एकाग्रता में वृद्धि होती है तथा सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। इसके अतिरिक्त समूह गतिविधियों के माध्यम से उनमें सहयोग, नेतृत्व, संचार कौशल, अनुशासन एवं उत्तरदायित्व जैसी जीवनोपयोगी क्षमताओं का भी विकास होता है।

विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भूगोल, पर्यावरण अध्ययन, भाषा, गणित तथा कला शिक्षा जैसे विषयों में बाह्य शिक्षण विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होता है। उदाहरण के लिए विज्ञान के विद्यार्थी पौधों, जीवजंतुओं-, जल स्रोतों एवं

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

पर्यावरणीय परिवर्तनों का प्रत्यक्ष अध्ययन कर सकते हैं। सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थी ऐतिहासिक स्थलों, ग्राम पंचायतों तथा स्थानीय संस्थानों का अवलोकन कर सामाजिक संरचना को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। इसी प्रकार भाषा शिक्षण में विद्यार्थियों को स्थानीय संस्कृति, लोककथाओं एवं सामाजिक संवादों से जोड़कर अभिव्यक्ति कौशल का विकास किया जा सकता है।

बाह्य शिक्षण विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता भी विकसित करता है। जब विद्यार्थी प्रकृति के साथ प्रत्यक्ष रूप से जुड़ते हैं, तब उनमें जैव विविधता, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा सतत विकास के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न होती है। इस प्रकार यह शिक्षा केवल ज्ञान तक सीमित न रहकर उत्तरदायी नागरिक निर्माण की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है।

यद्यपि बाह्य शिक्षण के अनेक लाभ हैं, फिर भी इसके प्रभावी क्रियान्वयन में कुछ चुनौतियाँ भी हैं। विद्यालयों में संसाधनों की कमी, समय प्रबंधन, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ, प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव तथा प्रशासनिक सहयोग की कमी इसके व्यापक उपयोग में बाधा उत्पन्न करती हैं। इसके अतिरिक्त सभी विद्यालयों के पास उपयुक्त बाह्य शिक्षण स्थल उपलब्ध नहीं होते। इसलिए आवश्यक है कि विद्यालय प्रशासन, शिक्षक, अभिभावक तथा नीति निर्माता मिलकर ऐसी योजनाएँ विकसित-करें जिनसे बाह्य शिक्षण को नियमित शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाया जा सके।

आज वैश्विक स्तर पर शिक्षा में नवाचार एवं गुणवत्तापूर्ण अधिगम पर बल दिया जा रहा है। ऐसे समय में बाह्य शिक्षण विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन से जोड़ने, ज्ञान को अनुभव में परिवर्तित करने तथा सीखने को आनंददायक बनाने का प्रभावी माध्यम बनकर उभर रहा है। यह शिक्षण प्रक्रिया विद्यार्थियों को केवल परीक्षा में सफलता के लिए नहीं, बल्कि जीवन की विविध परिस्थितियों में सक्षम, आत्मविश्वासी एवं उत्तरदायी नागरिक बनने के लिए भी तैयार करती है।

बाह्य शिक्षण के उद्देश्य

बाह्य शिक्षण)Outdoor Learning) का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों को कक्षाकक्ष की सीमाओं से बाहर वास्तविक - जीवन के अनुभवों के माध्यम से सीखने का अवसर प्रदान करना है। यह शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण तथा व्यवहार के समग्र विकास पर बल देती है। बाह्य शिक्षण केवल विषयगत ज्ञान तक सीमित नहीं रहता, बल्कि विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा शारीरिक विकास को भी प्रोत्साहित करता है। इसका उद्देश्य शिक्षणअधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी-, रोचक, व्यावहारिक एवं अनुभवात्मक बनाना है।

बाह्य शिक्षण का प्रथम उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान करना है। जब विद्यार्थी प्राकृतिक, सामाजिक या सांस्कृतिक परिवेश में जाकर किसी विषय का अध्ययन करते हैं, तब वे उसे अधिक गहराई से समझते हैं। प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित अधिगम अधिक स्थायी और प्रभावशाली होता है, क्योंकि इसमें विद्यार्थी स्वयं सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

दूसरा महत्त्वपूर्ण उद्देश्य विद्यार्थियों में अवलोकन, अन्वेषण तथा जिज्ञासा की भावना का विकास करना है। बाह्य शिक्षण विद्यार्थियों को अपने आसपास के वातावरण का निरीक्षण करने, प्रश्न पूछने तथा नई जानकारियाँ खोजने के लिए प्रेरित करता है। इससे उनकी वैज्ञानिक सोच तथा खोजपरक दृष्टिकोण का विकास होता है।

बाह्य शिक्षण का एक अन्य उद्देश्य विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से परिचित कराना है। कक्षा में प्राप्त सैद्धांतिक ज्ञान को व्यवहारिक रूप से समझने और उसका अनुप्रयोग करने का अवसर बाह्य शिक्षण प्रदान करता है। इससे विद्यार्थी विषयवस्तु को जीवन के संदर्भ में समझ पाते हैं तथा उनके ज्ञान का व्यावहारिक - महत्त्व स्पष्ट होता है।

यह शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, समस्यासमाधान क्षमता तथा निर्णय लेने की योग्यता का - विकास करने का भी लक्ष्य रखती है। विभिन्न परिस्थितियों और चुनौतियों का सामना करते समय विद्यार्थी स्वयं विचार करते हैं, विकल्पों का विश्लेषण करते हैं और उपयुक्त समाधान खोजते हैं। इससे उनकी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होती है।

बाह्य शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों में सामाजिक गुणों का विकास करना भी है। समूह आधारित गतिविधियों, शैक्षिक भ्रमणों और सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों में सहयोग, नेतृत्व, सहिष्णुता, संचार कौशल तथा टीम भावना का विकास होता है। वे दूसरों के साथ मिलकर कार्य करना सीखते हैं तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करते हैं।

इसके अतिरिक्त बाह्य शिक्षण विद्यार्थियों को प्रकृति और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने का कार्य करता है। प्राकृतिक संसाधनों, जैव विविधता तथा पर्यावरणीय समस्याओं का प्रत्यक्ष अध्ययन विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है। यह सतत विकास एवं पर्यावरणीय उत्तरदायित्व की भावना को भी सुदृढ़ करता है।

बाह्य शिक्षण के प्रमुख स्वरूप

बाह्य शिक्षण)Outdoor Learning) एक व्यापक एवं बहुआयामी शिक्षण पद्धति है, जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों को कक्षाकक्ष से बाहर विभिन्न प्राकृतिक-, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा व्यावहारिक परिवेशों में सीखने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से ज्ञान अर्जित करने, कौशल विकसित करने तथा वास्तविक जीवन से जुड़ने का अवसर प्रदान करना है। बाह्य शिक्षण के अनेक स्वरूप हैं, जो विषयवस्तु-, आयुस्तर-, शैक्षिक उद्देश्यों तथा उपलब्ध संसाधनों के अनुसार भिन्न भिन्न हो सकते-हैं। ये स्वरूप शिक्षणअधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी-, रोचक एवं जीवनोपयोगी बनाते हैं। बाह्य शिक्षण के प्रमुख स्वरूपों में प्रकृतिआधारित शिक्षण-, शैक्षिक भ्रमण, क्षेत्रीय अध्ययन, सामुदायिक अधिगम, साहसिक शिक्षण, पर्यावरणीय शिक्षण, संग्रहालय एवं विरासत आधारित शिक्षण, कृषि एवं ग्रामीण अध्ययन तथा सेवाअधिगम प्रमुख हैं।-

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

प्रकृतिआधारित शिक्षण बाह्य शिक्षण का सबसे लोकप्रिय एवं प्रभावशाली स्वरूप माना जाता है। इसके अंतर्गत - विद्यार्थियों को उद्यानों, वनों, नदियों, झीलों, पर्वतीय क्षेत्रों तथा अन्य प्राकृतिक स्थलों पर ले जाकर प्रकृति का प्रत्यक्ष अध्ययन कराया जाता है। विद्यार्थी पौधों, जीवजंतुओं-, पारिस्थितिकी तंत्र, मौसम तथा प्राकृतिक संसाधनों का अवलोकन करते हैं और उनके संबंध में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह स्वरूप विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना, प्रकृति प्रेम तथा संरक्षण की भावना विकसित करने में सहायक होता है।

शैक्षिक भ्रमण)Educational Excursion) बाह्य शिक्षण का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्वरूप है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को ऐतिहासिक स्थलों, संग्रहालयों, विज्ञान केंद्रों, औद्योगिक इकाइयों, पुस्तकालयों, सांस्कृतिक संस्थानों तथा अन्य शिक्षणसंबंधी स्थानों का भ्रमण कराया जाता है। इस प्रकार के भ्रमण विद्यार्थियों को - पुस्तकीय ज्ञान को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़ने का अवसर प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, इतिहास के विद्यार्थी किसी ऐतिहासिक स्मारक का भ्रमण करके उस काल की संस्कृति और स्थापत्य कला को प्रत्यक्ष रूप से समझ सकते हैं, जबकि विज्ञान के विद्यार्थी किसी विज्ञान संग्रहालय या अनुसंधान केंद्र में जाकर वैज्ञानिक सिद्धांतों के व्यावहारिक स्वरूप का अध्ययन कर सकते हैं।

क्षेत्रीय अध्ययन)Field Study) बाह्य शिक्षण का एक शोधपरक स्वरूप है, जिसमें विद्यार्थी किसी विशिष्ट क्षेत्र, समुदाय, प्राकृतिक स्थल या सामाजिक समस्या का प्रत्यक्ष अध्ययन करते हैं। इस प्रक्रिया में वे निरीक्षण, साक्षात्कार, सर्वेक्षण, डेटा संग्रहण तथा विश्लेषण जैसी गतिविधियों में भाग लेते हैं। क्षेत्रीय अध्ययन विद्यार्थियों में अनुसंधान कौशल, आलोचनात्मक चिंतन, समस्यासमाधान क्षमता तथा विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का विकास - करता है। भूगोल, समाजशास्त्र, पर्यावरण अध्ययन तथा मानवशास्त्र जैसे विषयों में यह स्वरूप विशेष रूप से उपयोगी माना जाता है।

सामुदायिक अधिगम)Community-Based Learning) बाह्य शिक्षण का एक ऐसा स्वरूप है, जिसमें विद्यार्थी स्थानीय समुदाय के साथ जुड़कर सीखते हैं। इसके अंतर्गत वे ग्राम पंचायतों, सामाजिक संस्थाओं, स्वास्थ्य केंद्रों, स्वयंसेवी संगठनों तथा विभिन्न सामुदायिक कार्यक्रमों का अध्ययन करते हैं। इस प्रकार की गतिविधियाँ विद्यार्थियों को सामाजिक संरचना, समस्याओं तथा विकास की प्रक्रियाओं को समझने में सहायता प्रदान करती हैं। साथ ही उनमें सामाजिक उत्तरदायित्व, सहानुभूति तथा नागरिक चेतना का विकास होता है।

साहसिक शिक्षण)Adventure Learning) भी बाह्य शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण स्वरूप है। इसके अंतर्गत ट्रैकिंग, पर्वतारोहण, कैंपिंग, जंगल भ्रमण, नौकायन तथा अन्य साहसिक गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं। इन गतिविधियों का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं होता, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, सहयोग की भावना, निर्णय लेने की योग्यता तथा चुनौतियों का सामना करने की क्षमता का विकास करना भी होता है। साहसिक शिक्षण विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनने तथा कठिन परिस्थितियों में कार्य करने के लिए तैयार करता है।

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

पर्यावरणीय शिक्षण)Environmental Learning) बाह्य शिक्षण का एक विशेष स्वरूप है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को पर्यावरणीय समस्याओं, प्राकृतिक संसाधनों तथा सतत विकास की अवधारणाओं से परिचित कराना है। इसके अंतर्गत वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण कार्यक्रम, जैव विविधता अध्ययन तथा पर्यावरण संरक्षण से संबंधित गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। यह स्वरूप विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता तथा उत्तरदायित्व की भावना विकसित करता है।

संग्रहालय एवं विरासत आधारित शिक्षण)Museum and Heritage Learning) भी बाह्य शिक्षण का एक प्रभावी स्वरूप है। इसके अंतर्गत विद्यार्थी संग्रहालयों, कला दीर्घाओं, पुरातात्विक स्थलों, स्मारकों तथा सांस्कृतिक धरोहरों का अध्ययन करते हैं। इससे उन्हें इतिहास, कला, संस्कृति तथा सभ्यता के विकास को समझने का अवसर मिलता है। यह स्वरूप विद्यार्थियों में सांस्कृतिक जागरूकता, राष्ट्रीय गौरव तथा ऐतिहासिक चेतना का विकास करता है।

कृषि एवं ग्रामीण अध्ययन आधारित शिक्षण बाह्य शिक्षण का एक व्यावहारिक स्वरूप है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को खेतों, कृषि अनुसंधान केंद्रों, डेयरी फार्मों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में ले जाकर कृषि, पशुपालन तथा ग्रामीण जीवन का अध्ययन कराया जाता है। इससे उन्हें कृषि प्रणालियों, ग्रामीण अर्थव्यवस्था तथा प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग की जानकारी प्राप्त होती है। विशेष रूप से भारत जैसे कृषि प्रधान देश में यह स्वरूप अत्यंत उपयोगी माना जाता है।

सेवाअधिग-म)Service Learning) बाह्य शिक्षण का एक आधुनिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण वाला स्वरूप है। इसमें विद्यार्थी समाज सेवा से संबंधित गतिविधियों में भाग लेते हुए सीखते हैं। जैसेसाक्षरता अभियान—, स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम, पर्यावरण संरक्षण अभियान, रक्तदान जागरूकता तथा सामुदायिक विकास परियोजनाएँ। यह स्वरूप विद्यार्थियों को समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है तथा उनमें मानवीय मूल्यों का विकास करता है।

अनुभवात्मक अधिगम और बाह्य शिक्षण

अनुभवात्मक अधिगम)Experiential Learning) आधुनिक शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है, जिसके अनुसार व्यक्ति प्रत्यक्ष अनुभवों, गतिविधियों और वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से सीखता है। यह अधिगम प्रक्रिया केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रहती, बल्कि ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोग, चिंतन, विश्लेषण तथा अनुभवों के पुनर्निर्माण पर आधारित होती है। बाह्य शिक्षण)Outdoor Learning) अनुभवात्मक अधिगम का एक सशक्त माध्यम है, क्योंकि इसमें विद्यार्थियों को कक्षाकक्ष की - सीमाओं से बाहर निकालकर प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा व्यावहारिक परिवेश में सीखने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। इस प्रकार बाह्य शिक्षण और अनुभवात्मक अधिगम एकदूसरे के पूरक हैं तथा दोनों का - मूल उद्देश्य सीखने की प्रक्रिया को अधिक सक्रिय, अर्थपूर्ण, सहभागी और जीवनोपयोगी बनाना है।

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

अनुभवात्मक अधिगम की अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि विद्यार्थी केवल सुनकर या पढ़कर ही नहीं, बल्कि स्वयं करके, देखकर, अनुभव करके तथा चिंतन करके भी सीखते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार ज्ञान का निर्माण व्यक्ति के अनुभवों और उन अनुभवों पर किए गए चिंतन से होता है। जब विद्यार्थी किसी गतिविधि में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, वास्तविक परिस्थितियों का सामना करते हैं तथा अपने अनुभवों का विश्लेषण करते हैं, तब उनका अधिगम अधिक गहरा और स्थायी बनता है। बाह्य शिक्षण इसी सिद्धांत को व्यवहार में लागू करता है। इसमें विद्यार्थियों को प्राकृतिक स्थलों, ऐतिहासिक स्मारकों, संग्रहालयों, विज्ञान केंद्रों, कृषि क्षेत्रों, उद्योगों तथा समुदायों में जाकर सीखने का अवसर मिलता है। इन अनुभवों के माध्यम से वे ज्ञान को प्रत्यक्ष रूप से समझते हैं और उसे अपने जीवन से जोड़ पाते हैं।

बाह्य शिक्षण अनुभवात्मक अधिगम को प्रभावी बनाने का एक उत्कृष्ट साधन है क्योंकि यह विद्यार्थियों को वास्तविक परिस्थितियों में सीखने का अवसर प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, यदि पर्यावरण अध्ययन के विद्यार्थी किसी वन क्षेत्र का भ्रमण करते हैं, तो वे केवल पुस्तकों में वर्णित पारिस्थितिकी तंत्र को नहीं पढ़ते, बल्कि उसे प्रत्यक्ष रूप से देखते, समझते और अनुभव करते हैं। इसी प्रकार इतिहास के विद्यार्थी किसी ऐतिहासिक स्मारक या पुरातात्विक स्थल का अध्ययन करके उस काल की संस्कृति, स्थापत्य कला तथा ऐतिहासिक घटनाओं को अधिक गहराई से समझ सकते हैं। इस प्रकार बाह्य शिक्षण विद्यार्थियों को अनुभवों के माध्यम से ज्ञान अर्जित करने का अवसर देता है, जिससे अधिगम अधिक प्रभावी और स्थायी बनता है।

अनुभवात्मक अधिगम और बाह्य शिक्षण दोनों ही विद्यार्थीकिंद्रित शिक्षण दृष्टिकोण पर आधारित हैं। पारंपरिक - शिक्षण पद्धति में शिक्षक ज्ञान का मुख्य स्रोत होता है और विद्यार्थी निष्क्रिय श्रोता की भूमिका निभाते हैं। इसके विपरीत अनुभवात्मक अधिगम एवं बाह्य शिक्षण में विद्यार्थी स्वयं सीखने की प्रक्रिया के केंद्र में होते हैं। वे निरीक्षण करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, खोज करते हैं, प्रयोग करते हैं तथा निष्कर्ष निकालते हैं। इससे उनमें स्व-मता विकसित होती है और वे ज्ञान के सक्रिय निर्माता बनते हैं।अधिगम की क्ष

बाह्य शिक्षण के माध्यम से अनुभवात्मक अधिगम विद्यार्थियों की जिज्ञासा तथा खोजी प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है। जब विद्यार्थी किसी नई परिस्थिति, स्थान या समस्या का सामना करते हैं, तो उनमें स्वाभाविक रूप से प्रश्न उत्पन्न होते हैं। वे उन प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करते हैं और इस प्रक्रिया में उनका ज्ञान विस्तृत होता है। यह प्रक्रिया उनके आलोचनात्मक चिंतन, तार्किक विश्लेषण तथा समस्यासमाधान क्षमता को विकसित करती - है। अनुभवात्मक अधिगम का यह पहलू विशेष रूप से विज्ञान, भूगोल, समाजशास्त्र तथा पर्यावरण अध्ययन जैसे विषयों में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

शिक्षण प्रभावशीलता की संकल्पना

शिक्षण प्रभावशीलता)Teaching Effectiveness) शिक्षा के क्षेत्र की एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है, जो इस बात को दर्शाती है कि शिक्षक द्वारा अपनाई गई शिक्षण प्रक्रियाएँ, विधियाँ, तकनीकें तथा रणनीतियाँ विद्यार्थियों के

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

अधिगम, ज्ञानार्जन, कौशल विकास एवं व्यक्तित्व निर्माण में कितनी सफल और उपयोगी सिद्ध होती हैं। सरल शब्दों में, जब शिक्षण अपने निर्धारित उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त कर लेता है तथा विद्यार्थियों के व्यवहार, ज्ञान, दृष्टिकोण और कौशल में अपेक्षित सकारात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम होता है, तब उसे प्रभावी शिक्षण कहा जाता है। शिक्षण प्रभावशीलता केवल विषयवस्तु के संप्रेषण तक सीमित नहीं है-, बल्कि यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, उनकी सीखने की क्षमता, रुचि, प्रेरणा तथा सक्रिय सहभागिता से भी जुड़ी हुई है। शिक्षण प्रभावशीलता की अवधारणा का संबंध शिक्षा की गुणवत्ता से है। किसी भी शिक्षा प्रणाली की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक विद्यार्थियों को कितनी प्रभावी ढंग से सीखने के अवसर प्रदान कर पाते हैं। प्रभावी शिक्षण वह है जिसमें शिक्षक केवल ज्ञान का प्रसार करने वाला व्यक्ति न होकर एक मार्गदर्शक, प्रेरक तथा अधिगम) सुविधाकर्ता-Facilitator) की भूमिका निभाता है। वह विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, रुचियों, क्षमताओं तथा सीखने की शैलियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण की योजना बनाता है और उन्हें सक्रिय रूप से अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित करता है।

शिक्षण प्रभावशीलता का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों के अधिगम को अधिक सार्थक, स्थायी तथा उपयोगी बनाना है। इसके अंतर्गत शिक्षक विषयको इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि विद्यार्थी उसे समझ सकें वस्तु-, उसका विश्लेषण कर सकें तथा वास्तविक जीवन में उसका प्रयोग कर सकें। प्रभावी शिक्षण विद्यार्थियों की जिज्ञासा को बढ़ाता है, उनके चिंतन को प्रोत्साहित करता है तथा उन्हें स्वतंत्र रूप से सीखने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार शिक्षण प्रभावशीलता केवल परीक्षा परिणामों तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और व्यवहार में होने वाले समग्र विकास से संबंधित होती है।

विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षण प्रभावशीलता को अलगकोणों से परिभाषित किया है। कुछ विद्वानों अलग दृष्टि- के अनुसार शिक्षण की प्रभावशीलता का मूल्यांकन विद्यार्थियों की उपलब्धियों और अधिगम परिणामों के आधार पर किया जाता है, जबकि अन्य विद्वान इसे शिक्षक की संप्रेषण क्षमता, कक्षा प्रबंधन, शिक्षण कौशल तथा विद्यार्थियों के साथ उसके सकारात्मक संबंधों से जोड़कर देखते हैं। आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में शिक्षण प्रभावशीलता का अर्थ केवल जानकारी प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान क्षमता, रचनात्मकता, सहयोगात्मक अधिगम तथा जीवन कौशलों का विकास करना भी है।

प्रभावी शिक्षण की कुछ प्रमुख विशेषताएँ होती हैं। इसमें शिक्षण के स्पष्ट उद्देश्य निर्धारित किए जाते हैं, विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जाती है, उपयुक्त शिक्षण विधियों और तकनीकों का उपयोग किया जाता है तथा सतत मूल्यांकन के माध्यम से अधिगम की प्रगति का आकलन किया जाता है। प्रभावी शिक्षक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझते हैं और उनकी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया को अनुकूलित करते हैं। वे कक्षा में ऐसा वातावरण निर्मित करते हैं जहाँ विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से प्रश्न पूछ सकें, विचार व्यक्त कर सकें और सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें। शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले अनेक कारक होते हैं। इनमें शिक्षक का विषय ज्ञान, शिक्षण कौशल,

E-mail: *editor.jslsci888@gmail.com*

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

अनुभव, व्यक्तित्व, प्रेरणा तथा नवाचार की क्षमता प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त विद्यालय का वातावरण, उपलब्ध संसाधन, कक्षा का आकार, विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि तथा पाठ्यक्रम की प्रकृति भी शिक्षण की प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं। आधुनिक तकनीकों, डिजिटल संसाधनों तथा गतिविधिआधारित शिक्षण विधियों के उपयोग - से शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

समकालीन शिक्षा में शिक्षण प्रभावशीलता का महत्त्व और अधिक बढ़ गया है क्योंकि आज शिक्षा का लक्ष्य केवल सूचना प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाना है। इसलिए शिक्षण प्रक्रिया को विद्यार्थीकेंद्रित-, अनुभवात्मक, सहभागितापूर्ण तथा व्यावहारिक बनाने पर बल दिया जा रहा है। बाह्य शिक्षण, परियोजना आधारित अधिगम, सहयोगात्मक अधिगम तथा तकनीकीसहायित शिक्षण - जैसी विधियाँ शिक्षण प्रभावशीलता को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

शिक्षण प्रभावशीलता एक व्यापक एवं बहुआयामी अवधारणा है, जो शिक्षणअधिगम प्रक्रिया की गुणवत्ता और - सफलता को निर्धारित करती है। यह केवल ज्ञान के संप्रेषण तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा व्यावहारिक विकास से भी संबंधित है। प्रभावी शिक्षण विद्यार्थियों को सक्रिय, रचनात्मक और आत्मनिर्भर शिक्षार्थी बनाता है तथा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। इसलिए प्रत्येक शिक्षा प्रणाली में शिक्षण प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए नवाचारी शिक्षण विधियों, उपयुक्त संसाधनों तथा शिक्षक प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

बाह्य शिक्षण और शिक्षण प्रभावशीलता

बाह्य शिक्षण)Outdoor Learning) आधुनिक शिक्षा की एक महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली शिक्षण पद्धति है, जो विद्यार्थियों को कक्षाकक्ष की सीमाओं से बाहर वास्तविक जीवन की परिस्थितियों, प्राकृतिक परिवेश, सामाजिक संस्थाओं तथा सांस्कृतिक स्थलों में सीखने का अवसर प्रदान करती है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में केवल पुस्तकीय ज्ञान को पर्याप्त नहीं माना जाता, बल्कि यह अपेक्षा की जाती है कि विद्यार्थी ज्ञान को समझें, उसका व्यावहारिक अनुप्रयोग करें तथा जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में उसका उपयोग करने में सक्षम हों। इस संदर्भ में बाह्य शिक्षण शिक्षण प्रभावशीलता को बढ़ाने का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। शिक्षण प्रभावशीलता से आशय उस सीमा से है, जहाँ शिक्षण प्रक्रिया अपने उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करती है और विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण तथा व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाती है। बाह्य शिक्षण इस उद्देश्य की पूर्ति में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह शिक्षणअधिगम प्रक्रिया को अधिक सक्रिय-, अनुभवात्मक, सहभागी तथा जीवनोपयोगी बनाता है।

पारंपरिक शिक्षण पद्धति में शिक्षक ज्ञान का मुख्य स्रोत होता है और विद्यार्थी प्रायः निष्क्रिय श्रोता की भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार की व्यवस्था में अधिगम अक्सर रटने तक सीमित रह जाता है तथा विद्यार्थी विषयवस्तु को - वास्तविक जीवन से जोड़कर नहीं देख पाते। इसके विपरीत बाह्य शिक्षण विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभवों के

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

माध्यम से सीखने का अवसर प्रदान करता है। जब विद्यार्थी किसी ऐतिहासिक स्थल, विज्ञान संग्रहालय, कृषि क्षेत्र, उद्योग, वन क्षेत्र, नदी, झील अथवा सामुदायिक संस्था का प्रत्यक्ष अध्ययन करते हैं, तब वे केवल सैद्धांतिक जानकारी प्राप्त नहीं करते, बल्कि वास्तविक परिस्थितियों में ज्ञान का अनुभव भी करते हैं। इस प्रकार प्राप्त ज्ञान अधिक स्पष्ट, गहन तथा स्थायी होता है। यही कारण है कि बाह्य शिक्षण शिक्षण प्रभावशीलता को बढ़ाने में अत्यंत सहायक माना जाता है।

शिक्षण प्रभावशीलता का एक प्रमुख संकेतक विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता है। बाह्य शिक्षण विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से सम्मिलित करता है। वे निरीक्षण करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, जानकारी एकत्र करते हैं, चर्चा करते हैं तथा निष्कर्ष निकालते हैं। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी केवल जानकारी प्राप्त करने वाले नहीं रहते, बल्कि ज्ञान के सक्रिय निर्माता बन जाते हैं। उनकी सहभागिता बढ़ने से विषय के प्रति रुचि और प्रेरणा में वृद्धि होती है, जिससे शिक्षण अधिक प्रभावी बनता है। जब विद्यार्थी स्वयं किसी गतिविधि में भाग लेते हैं, तब उनका ध्यान अधिक केंद्रित रहता है और वे सीखी गई बातों को लंबे समय तक स्मरण रख पाते हैं।

बाह्य शिक्षण शिक्षण प्रक्रिया को अनुभवात्मक बनाता है, जो प्रभावी शिक्षण की आधारशिला मानी जाती है। अनुभवात्मक अधिगम के सिद्धांत के अनुसार विद्यार्थी प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं। उदाहरण के लिए, यदि पर्यावरण अध्ययन के विद्यार्थियों को केवल पाठ्यपुस्तक में प्रदूषण के प्रकार पढ़ाए जाएँ, तो उनकी समझ सीमित रह सकती है; लेकिन यदि उन्हें किसी नदी, औद्योगिक क्षेत्र या शहरी क्षेत्र का भ्रमण कराया जाए और वहाँ प्रदूषण के प्रभावों का प्रत्यक्ष अवलोकन कराया जाए, तो उनकी समझ अधिक गहन और व्यावहारिक होगी। इस प्रकार बाह्य शिक्षण अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देकर शिक्षण की प्रभावशीलता को सुदृढ़ करता है। बाह्य शिक्षण विद्यार्थियों की जिज्ञासा और खोजी प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहित करता है। प्रभावी शिक्षण केवल उत्तर देने तक सीमित नहीं होता, बल्कि विद्यार्थियों में प्रश्न पूछने और उत्तर खोजने की क्षमता विकसित करता है। बाह्य वातावरण में विद्यार्थियों को अनेक नई परिस्थितियों, वस्तुओं और घटनाओं का सामना करना पड़ता है, जिससे उनमें स्वाभाविक रूप से जिज्ञासा उत्पन्न होती है। वे विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयास करते हैं, जानकारी एकत्र करते हैं और अपने अनुभवों के आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं। इससे उनकी विश्लेषणात्मक क्षमता तथा आलोचनात्मक चिंतन का विकास होता है, जो प्रभावी शिक्षण के महत्त्वपूर्ण घटक हैं।

शिक्षण प्रभावशीलता का संबंध विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों से भी होता है। विभिन्न शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि बाह्य शिक्षण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों में सकारात्मक योगदान देता है। प्रत्यक्ष अनुभवों और व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से अर्जित ज्ञान अधिक स्थायी होता है तथा विद्यार्थी उसे विभिन्न परिस्थितियों में लागू करने में सक्षम होते हैं। बाह्य शिक्षण विद्यार्थियों को विषयवस्तु की गहरी समझ प्रदान करता है-, जिससे उनकी उपलब्धियों और प्रदर्शन में सुधार होता है। विशेष रूप से विज्ञान, भूगोल, इतिहास, पर्यावरण अध्ययन तथा समाजशास्त्र जैसे विषयों में बाह्य शिक्षण अत्यंत प्रभावी सिद्ध होता है।

E-mail: *editor.jslsci888@gmail.com*

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

बाह्य शिक्षण शिक्षकों की शिक्षण क्षमता और प्रभावशीलता को भी बढ़ाता है। पारंपरिक शिक्षण में शिक्षक प्रायः व्याख्यान देने तक सीमित रहते हैं, जबकि बाह्य शिक्षण में उन्हें विभिन्न गतिविधियों की योजना बनानी होती है, विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना होता है तथा उन्हें अनुभवों से सीखने के अवसर प्रदान करने होते हैं। इससे शिक्षक की भूमिका ज्ञान प्रदाता से बदलकर अधिगम) सुविधाकर्ता-Facilitator) की हो जाती है। शिक्षक विद्यार्थियों को खोज, अन्वेषण और चिंतन के लिए प्रेरित करते हैं। इस प्रकार शिक्षण अधिक जीवंत, रचनात्मक और प्रभावी बन जाता है।

बाह्य शिक्षण विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। यह उनकी समझ, विश्लेषण, अनुप्रयोग तथा मूल्यांकन की क्षमताओं को विकसित करता है। जब विद्यार्थी वास्तविक परिस्थितियों में किसी समस्या का अध्ययन करते हैं, तो वे केवल तथ्यों को याद नहीं करते, बल्कि उनके कारणों, प्रभावों और समाधानों को भी समझते हैं। इससे उनकी उच्च स्तरीय चिंतन क्षमता विकसित होती है और वे जटिल समस्याओं का समाधान खोजने में सक्षम बनते हैं। यह प्रक्रिया शिक्षण की प्रभावशीलता को बढ़ाती है क्योंकि इसका लक्ष्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि सोचने और समझने की क्षमता विकसित करना होता है।

भावात्मक क्षेत्र में भी बाह्य शिक्षण अत्यंत प्रभावी सिद्ध होता है। प्राकृतिक वातावरण में सीखने से विद्यार्थियों में आनंद, उत्साह तथा सकारात्मक भावनाएँ उत्पन्न होती हैं। वे प्रकृति, समाज तथा संस्कृति के प्रति संवेदनशील बनते हैं और उनमें सहानुभूति, सहयोग तथा उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास होता है। प्रभावी शिक्षण का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि भावनात्मक और सामाजिक विकास भी होता है। बाह्य शिक्षण इस उद्देश्य की पूर्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सामाजिक कौशलों के विकास की दृष्टि से भी बाह्य शिक्षण अत्यंत उपयोगी है। समूह आधारित गतिविधियाँ, क्षेत्रीय अध्ययन, शैक्षिक भ्रमण तथा सामुदायिक कार्यक्रम विद्यार्थियों को दूसरों के साथ कार्य करने का अवसर प्रदान करते हैं। इससे उनमें संचार कौशल, नेतृत्व क्षमता, सहयोग की भावना तथा टीमवर्क का विकास होता है। वे विभिन्न दृष्टिकोणों को समझना सीखते हैं और सामाजिक संबंधों को बेहतर ढंग से निभाने में सक्षम बनते हैं। यह सामाजिक विकास शिक्षण प्रभावशीलता का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है।

बाह्य शिक्षण विद्यार्थियों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। प्राकृतिक वातावरण में सीखने से तनाव कम होता है, एकाग्रता बढ़ती है तथा मानसिक ताजगी का अनुभव होता है। विभिन्न बाह्य गतिविधियाँ विद्यार्थियों को शारीरिक रूप से सक्रिय बनाती हैं, जिससे उनका स्वास्थ्य बेहतर होता है। स्वस्थ और सक्रिय विद्यार्थी सीखने की प्रक्रिया में अधिक प्रभावी ढंग से भाग लेते हैं, जिससे शिक्षण के परिणाम भी बेहतर होते हैं।

निष्कर्ष

बाह्य शिक्षण आधुनिक शिक्षा की एक प्रभावशाली एवं अनुभवात्मक शिक्षण पद्धति है (आउटडोर लर्निंग), जो

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

विद्यार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। यह शिक्षण प्रक्रिया विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़ते हुए ज्ञान को व्यवहारिक अनुभवों के माध्यम से आत्मसात करने का अवसर प्रदान करती है। बाह्य शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों में जिज्ञासा, अवलोकन क्षमता, सृजनात्मक चिंतन, समस्या-माधान कौशलस, सहयोगात्मक कार्यशैली तथा आत्मविश्वास का विकास होता है। साथ ही, यह शिक्षणअधिगम - प्रक्रिया को अधिक रोचक, सक्रिय एवं विद्यार्थीकेंद्रित बनाता है।- यद्यपि इसके सफल क्रियान्वयन के लिए पर्याप्त संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षक, सुरक्षित वातावरण एवं संस्थागत सहयोग आवश्यक है, फिर भी इसके शैक्षिक लाभ इन चुनौतियों की तुलना में कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। यदि विद्यालयों में योजनाबद्ध रूप से बाह्य शिक्षण गतिविधियों को नियमित पाठ्यक्रम से जोड़ा जाए, तो विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के साथसाथ उन-के व्यक्तित्व, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा पर्यावरणीय चेतना का भी प्रभावी विकास संभव होगा। इसलिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में गुणवत्तापूर्ण, अनुभवात्मक एवं जीवनोपयोगी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए बाह्य शिक्षण को एक अनिवार्य एवं प्रभावी शिक्षण रणनीति के रूप में अपनाया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राचेल न्याना मनी मोसेस एट अल ईएसएल संदर्भों में लेखन कौशल पर छात्रों और शिक्षकों द्वारा " खंड "एक साहित्य समीक्षा :सामना की जाने वाली चुनौतियाँ10 नंबर 13, दिसंबर 2019

2. कोर्नविपा पूनपोन एट अल छात्रों की अंग्रेजी भाषा दक्षता पर थाई ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के" वॉल्यूम। "आधारित एकीकृत शिक्षा की प्रभावशीलता-आधारित और शैली-कार्य12 नं .9 (2022)

3. पेट्रीसिया ब्रैडी गैब्लिंस्के छात्र और शिक्षक संबंधों का एक केस अध्ययन और छात"्र सीखने पर प्रभाव"2014

4. अराम, यूसुफ, सईद शरीफी रहनमो, अयातुल्ला फाथी, माजिद शरीफी रहनमो और फरशीद अराम। 2022. छात्रों के शैक्षणिक उत्साह और जीवन शक्ति पर वीडियो सामग्री का निर्माण करके अध्ययन रणनीतियों का उपयोग करके अंग्रेजीभाषा पाठ पढ़ाने की प्रभावशीलत-ा। भाषाएँ 7: 189. https://doi.org/10.3390/ भाषाएँ7030189

5. किंटू, एम.जे., झू, सीऔर कागाम्बे ., ईछात्र विशेषताओं :मिश्रित शिक्षण प्रभावशीलता ., डिजाइन सुविधाओं और परिणामों के बीच संबंध। इंट जे एडुक टेक्नोल हाई एडुक 14, 7 (2017)। https://doi.org/10.1186/s41239-017-0043-4

6. डुओंग हु टोंग एट अल क उपलब्धिछात्रों की शैक्षणि", स्वअध्ययन कौशल और सीखने के दृष्टिकोण - "प्रयोग अध्ययन-विमान में निर्देशांक के लिए सम्मेलनों को पढ़ाने में एक अर्ध :पर मिश्रित शिक्षा की प्रभावशीलता खंड8, अंक 12, दिसंबर 2022, ई12657

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

7. अदिसु सेवबिहोन गेटी | मारिया पोपेस्कु) (समीक्षा संपादक)2020) एक विदेशी भाषा के रूप में अंग्रेजी सीखने के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारक, कॉजेंट एजुकेशन, 7:1, डीओआई : 10.1080/2331186X.2020.1738184

8. पुष्पितसारी, त्रि यूलियाना। 2011. लेनसुधार देन संबंधी बातचीत के लिए छात्रों के बोलने के कौशल में-) के लिए सामुदायिक भाषा सीखने का उपयोग करने की प्रभावशीलता2010/2011 के शैक्षणिक वर्ष में एमटीएस मिफ्ताहुल उलूम तम्बाक्रोमो के आठवीं कक्षा के छात्रों का एक प्रायोगिक अध्ययन। अंतिम (परियोजना। अंग्रेजी विभाग। भाषा एवं कला संकाय। सेमरंग स्टेट यूनिवर्सिटी। पर्यवेक्षक :I. डॉद्वी .जे.एच . रुक्मिणी, एमगलुह किराना द्वी अरेनी .द्वितीय .डी.पी., एस.एस., एम.डी.पी.

9. मनेशा कौर राजेंद्र सिंह माध्यमिक विद्यालयों के लिए अंग्रेजी में मौखिक प्रवीणता की प्रभावशीलता" " के बीच अंग्रेजी भाषा शब्दावली में सुधार करने मेंकार्यक्रम माध्यमिक विद्यालय के छात्रों (अंग्रेजी-ओपीएस) खंड6, संख्या 6 (2015)

10. नूतन कुमारी प्रबंधन कॉलेजों में पेशेवर छात्रों में अंग्रेजी भाषा शिक्षण और सीखने के मुद्दों की " "खोज2020

11. सौसन अलबकरी "ओमान के एक सार्वजनिक कॉलेज में सामग्री पाठ्यक्रमों में छात्रों के सीखने के अनुभवों और शिक्षा की गुणवत्ता पर अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा का प्रभाव"2017

12. नतालिया राहे हुस्नुल खोतिमा इस्लामिक बोर्डिंग स्कूल में अंग्रेजी दैनिक भाषा कार्यक्रम बोलने में " छात्रों की समस्याओं का विश्लेषण"2015

13. फ़वाज़ अलकर्णी सऊदी पुरुष किशोर छात्रों के पढ़ने और लिखने के कौशल पर इंटेल अंग्रेजी भाषा " "सीखने के कार्यक्रम की प्रभावशीलता2017

14. त्शाई, किम येव और हो, जीहोउ और याप-, इंग ह्वा और एनजी, हूं किआट।)2014)। परिणाम- .शैक्षिक उद्देश्यों का आकलन। इंजीनियरिंग शिक्षा इंजीनियरिंग स्नातक डिग्री के लिए कार्यक्रम - आधारित शिक्षा 9. 74-85. 10.11120/एनईडी.2014.00020।

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com